

8

घट में परमात्म ध्याइये हो...

घट में परमात्म ध्याइये हो, परम धरम धनहेत....
ममता बुद्धि निवारिये हो, टारिये भरम निकेत ॥ घट में. ॥

प्रथमहिं अशुचि निहारिये हो, सात धातु यह देह ।
काल अनन्त सहे दुःख जानै, ताको तजो अब नेह ॥१॥

घट में....

ज्ञानावरणादिक जमरूपी, निजतैं भिन्न निहार ।
रागादिक परिनति लख न्यारी, न्यारो सुबुध विचार ॥२॥

घट में....

तहाँ शुद्ध आत्म निरविकल्प, ह्वै करि तिसको ध्यान ।
अल्प कालमें घाति नसत हैं, उपजत केवलज्ञान ॥३॥

घट में....

चार अघाति नाशि शिव पहुँचे, विलसत सुख जु अनन्त ।
सम्यक दरसनकी यह महिमा, 'द्यानत' लह भव अन्त ॥४॥

घट में....



हे जीव! परम धर्म अर्थात् पूर्ण सुख रूपी धन को प्राप्त करने के लिये अपने आत्मा में विराजमान परमात्म स्वरूप का ध्यान करो। पर द्रव्यों के प्रति ममत्व परिणाम को दूर हटाकर इस अनादि के भ्रम को टालो।

जिस देह में अपनेपन के कारण अनन्त काल तक दुःख सहन किये सर्वप्रथम सप्त कुधातु में अर्थात् मल-मूत्र आदि का भंडार उस देह को अशुचि जानो और इसके प्रति मोह का त्याग करो।

ज्ञानावरण आदि आठ कर्म यम के समान हैं; इनसे अपने को भिन्न देखो और रागादि परिणामों को अपनी आत्मा से भिन्न अनुभव करो - यही ज्ञानियों का विचार है।

फिर निर्विकल्प शुद्ध आत्मा जो कि तेरा स्वरूप है उसका ध्यान करो जिसके ध्यान से अल्प काल में चार घाति कर्मों का नाश होता है और केवलज्ञान प्रगट होता है।

फिर चार अघाति कर्मों का नाश कर जीव मोक्ष पहुँच जाता है जहाँ अनन्त काल के लिये अनंत सुख का भोग ही होता है। ध्यानतरायजी कहते हैं कि यह सब सम्यक्दर्शन की ही महिमा है जिससे संसार के दुःखों का अन्त होता है।